P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जोधपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की स्वधारणा एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

अनिल कुमार
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर

गोपाल सिंह शेखावत
पर्यवेक्षक,
प्रवक्ता,
श्री गोविन्द सिंह गुर्जर राजकीय महाविद्यालय, नसीराबाद,
अजमेर,राजस्थान

सारांश

जोधपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शारीरिक अक्षम विद्यार्थियो की स्वधारणा एवं संवेगात्मक बुद्वि का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में कुल 100 शारीरिक अक्षम विद्यार्थी (50 छात्र + 50 छात्राएं) लिये गये हैं । अध्ययन में सर्वेक्षण विधि तथा एस. पी. आहलूवालिया द्वारा निर्मित चिल्ड्रन सेल्फ कानसेप्ट स्केल (CSCS) व डॉ. एस. के. मंगल व श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मंगल संवेगात्मक बुद्वि परिसूची(MEII) परिक्षणो का प्रयोग किया गया जिसमे पाया कि छात्र व छात्राओं की स्वधारणा एवं संवेगात्मक बुद्वि में कोई सार्थक अन्तर नही होता है । जिसके आधार पर हम कह सकते है कि कि शारीरिक रूप से अक्षम छात्र व छात्राओं की स्वधारणा व संवेगात्मक बुद्वि में कोई अन्तर नही होता है।

मुख्य शब्द : शारीरिक अक्षम, स्वधारणा, संवेगात्मक बुद्वि, माध्यमिक स्तर

प्रस्तावना

प्रकृति अनेक सुन्दरतम पदार्थो से परिपूर्ण हैं और मानव का उन सौन्दर्ययुक्त वस्तुओं के आनन्द से अनुभूत होना मानव की प्रकृति है, जो एक ईश्वरीय देन है । मनुष्य जब इस अनुभूति को मस्तिष्क में स्थान देता है तो वह बुद्धि का प्रयोग कर तुलना प्रारम्भ करता है, भेद करने लगता है, अच्छा बुरा उच्च निम्न आदि में। यही भेद व्यक्ति के परिवार व परिवार से समाज में आता है। समाज में किसी का सुन्दर स्वस्थ होना तो एक विश्वासपूर्ण जीवन का सृजन करता है । परन्तु जो किसी भी रुप में शारीरिक रुप से अक्षम है, उनके लिए विकास के मार्ग प्रारम्भ से ही बाधापूर्ण लक्षित होते है ।

बच्चे चाहे सामान्य हो या शारीरिक रुप से अक्षम, वे राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है । किसी समाज, राज्य एंव देश का भविष्य इन्ही पर निर्भर करता है। बच्चे ही विज्ञान एवं तकनिकी में सहयोग देकर अपनी सृजनात्मक शक्ति के आधार पर देश को प्रगति एवं समृद्धि के पथ पर ले जा सकते है ।

वर्तमान में विश्व के सभी राष्ट्रों में, विश्व स्वास्थ्य संगठन, रेड क्रॉस, विश्व धर्मसंघ एवं मानव कल्याण की पुष्टि से नियोजित संस्थाएं शारीरिक रुप से अक्षम बालकों के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर उनकी कुशलताओं का विकास कर उन्हे समाज का अभिन्न अंग बनाने हेतु प्रयत्नशील हैं। इसी क्रम में भारत में भी केन्द्र एवं राज्य सरकारें तथा कल्याणकारी सामाजिक संगठन शारीरिक रुप से अक्षम बच्चों की शिक्षा, पुनर्वास तथा रोजगार हेतु प्रयत्नशील है।

मानव के सम्पूर्ण विकास तथा प्रगति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान हैं। विद्यालय शिक्षा का औपचारिक अभिकरण है जहां बालकों का शारीरिक, मानसिक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है। आज सम्पूर्ण विश्व इसे स्वीकारने लगा है कि हमारे भविष्य को आकार देने में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है । शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया का एक आवश्यक घटक हैं । शिक्षक मानव सम्बन्धों का एक कलाकार है जो विद्यार्थियों की भावनाओं तथा आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होता है ।

विद्यार्थी जब अपनी दृष्टि से अपने जीवन के प्रत्यक्ष बोध क्षेत्र में अपने लक्ष्यो को आत्मसात् करता हैं तथा जिनको वह अपने अंश के रुप में भी विशेषता के रुप में देखता है । उस समय स्वधारणा का विकास होता है । प्रत्येक विद्यार्थी चाहे वह सामान्य हो या शारिरिक रुप से अक्षम उसमें स्वधारणा का विकास होता है ऐसा माना जाता है कि सामान्य विद्यार्थी की तुलना में अक्षम विद्यार्थियों में स्वधारणा निम्न श्रेणी की होती है जो कि शोध का विषय है। इसी प्रकार शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि भी निम्न होना माना जाता हैं क्योंकि वह अपनी शारिरिक अक्षमताओं के कारण अपने संवेगों पर नियंत्रण

नही रख पाता तथा संवेगात्मक रुप से छोटी छोटी बातों पर उग्र रुप धारण कर लेता है। शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की स्वधारणा के चन्द्रोक (1972) द्वारा किये गये अध्ययन में पाया गया कि स्वधारणा में मानसिक योग्यता स्तर तथा असमायोजन के बीच उच्च तथा धनात्मक संबंध होता है। छात्रों की तुलना में छात्राओं में हीन भावना तथा संवेगात्मक अस्थिरता अधिक पायी जाती है। के.एल. शर्मा (1978) ने बताया कि उच्च बुद्धि लब्धि वाले छात्रों के समूह में स्वधारणा तथा बुद्धि में कोई सम्बन्ध नही होता है तथा छात्रों की स्वधारणा छात्राओं की तुलना में अधिक होती है। स्वधारणा व निष्पत्ति में धनात्मक सह– सबंध भी होता है। मालती (2011) द्वारा किये लघु शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि कक्षा 12 में अध्ययनरत छात्राओं व छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नही होता है। वर्मा राजकुमार (2011) द्वारा किये गये अध्ययन में पाया कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में असमानता होती है ।

शारीरिक अक्षम बालको की आवश्यकताएं व समस्याएं भी सामान्य बालकों की तरह ही होती हैं लेकिन इन बालको को वातावरण से सामंजस्य करने में अन्य बालकों से ज्यादा मेहनत करनी होती है। इन बालकों के सर्वांगीण विकास को अनेक कारक प्रभावित करते है जिनमें स्वधारणा, संवेगात्मक बुद्धि, दुश्चिन्ता, समायोजन व शैक्षिक आकांक्षा आदि प्रमुख हैं जिनमें स्वधारणा व संवेगात्मक बुद्धि पर बहुत कम शोध हुआ हैं। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शारीरिक रूप से अक्षम छात्र व छात्राओं के मध्य स्वधारणा एवं संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर है या नहीं, इसे सिद्ध करने हेतु प्रस्तुत शोध किया गया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये –

1. शारीरिक रुप से अक्षम छात्र व छात्राओं की स्वधारणा का अध्ययन करना ।
2. शारीरिक रुप से अक्षम छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना ।
3. शारीरिक रुप से अक्षम छात्र व छात्राओं की स्वधारणा की तुलना करना ।
4. शारीरिक रुप से अक्षम छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्न परिकल्पनाऍ निर्धारित की गयी –

1. शारीरिक रुप से अक्षम छात्र व छात्राओं की स्वधारणा में कोई सार्थक अन्तर नही होता है ।
2. शारीरिक रुप से अक्षम छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।

अनुसंधान विधि व उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा निम्न उपकरणों को प्रयोग में लाया गया –

1. चिल्ड्रन सेल्फ कानसेप्ट स्केल (CSCS) एस.पी. आहलुवालिया द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत परीक्षण ।
2. मंगल संवेगात्मक बुद्धि परिसूचि (MEII) डॉ.एस.के मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत परीक्षण ।

अध्ययन परीसीमन

प्रस्तुत शोध समस्या का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया हैं –

1. प्रस्तुत शोध कार्य में शारीरिक अक्षम विधार्थियों की स्वधारणा व संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया गया।
2. प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श हेतु जोधपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को सम्मिलित किया गया ।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के रुप में 50 छात्र व 50 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है ।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में सरकारी, निजी व अन्य सभी प्रकार के विद्यालयों को शामिल किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में दत्त संकलन हेतु जोधपुर जिले के विभिन्न विद्यालयों के 100 शारीरिक रुप से अक्षम विद्यार्थियों (50 छात्र + 50 छात्राएं) को शामिल किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकिय विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया । सांख्यिकी के अन्तर्गत प्राप्त अंको के माध्यमान एवं प्रमाप विचलन की गणना करके t मूल्य ज्ञात किया गया ताकि दो समूह के बीच अन्तर की सार्थकता जान सके । शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए आंकडों को निम्न प्रकार से तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया –

तालिका संख्या – 1
जोधपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की स्वधारणा से संबंधित सांख्यिकी

क्र. सं.	समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थकता (.05 स्तर पर)
1	छात्र	50	62.92	10.80	1.32	असार्थक
2	छात्राएं	50	60.57	10.70		

प्रस्तुत तालिका संख्या 1 से यह स्पष्ट है कि स्वधारणा पर छात्र समूह का मध्यमान 62.92 तथा प्रमाप विचलन 10.80 हैं। जबकि छात्रा समूह का प्राप्त मध्यमान 60.57 तथा प्रमाप विचलन 10.70 हैं। दोनों समूह के माध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता जानने के लिए ज मूल्य ज्ञात किया गया जिसका मान 1.32 प्राप्त हुआ। यह 0.05 स्तर के सारणीमान 1.96 से कम है जिसके आधार पर हम कह सकते है कि शारीरिक रूप से अक्षम छात्र व छात्राओं के मध्यमानों के बीच स्वधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या – 2

जोधपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित सांख्यिकी

क्र. सं.	समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर(.05 स्तर पर)
1	छात्र	50	71.44	12.80	0.26	असार्थक
2	छात्राएं	50	72.01	13.10		

प्रस्तुत तालिका संख्या 2 से यह स्पष्ट है कि संवेगात्मक बुद्धि पर छात्र समूह का मध्यमान 71.44 तथा प्रमाप विचलन 12.80 है, जबकि छात्रा समूह का प्राप्त मध्यमान 72.01 है तथा प्रमाप विचलन 13.10 है दोनों समूह के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता जानने के लिए ज मूल्य ज्ञात किया गया जो 0.26 आया। प्राप्त t मूल्य 0.05 स्तर के सारणीमान 1.96 से कम है जिसके आधार पर हम कह सकते है कि शारीरिक रूप से अक्षम छात्र व छात्राओं में मध्यमानों के बीच संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

निष्कर्ष

सारांश रुप से कहा जा सकता है कि जोधपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की स्वधारणा एवं संवेगात्मक बुद्धि के अध्ययन से प्राप्त परिणामों में पाया कि छात्र व छात्राओं की स्वधारणा एवं संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। जिसके आधार पर हम कह सकते है कि शारीरिक रूप से अक्षम छात्र व छात्राओं की स्वधारणा व संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल रामनारायण एवं अस्थाना विपिन (1978) – 'मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
2. बेस्ट जान डब्ल्यू (1963) रिसर्च इन एज्यूकेशन, प्रिटिंग्स हाल प्रा.लि. दिल्ली।
3. बुच एम.बी. (1989–92) फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन ऐज्यूकेशन। वोल्यूम –1 , एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
4. भरत उषा (1963) – फिजीकली हैन्डीकैप्ड, पापुलर प्रकाशन, बोम्बे ।
5. देवी.पी. एण्ड शर्मा एस. (1990) 'सेल्फ कनसेप्ट एण्ड स्कूल एचीवमेन्ट इण्डियन एज्यूकेशन रिव्यू', एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
6. कौशिक बी.एन. – विकलांग शिक्षा सिन्धु, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर ।